Harvey A. Carr (1873 – 1954)

प्रकार्यवाद की आरम्भ जॉन डिवी और एंजेल ने किया था, परन्तु इसकी प्रौढ़ता हार्वे कार की अध्यक्षता में हुई। हार्वे कार का जन्म 1873 में हुआ। इतिहासकारों ने इन्हें प्रकार्यवादी मनोविज्ञान का विकासकर्ता माना है, क्योंकि इसकी लोकप्रियता इन्हीं के कार्यविधि में अपने शिखर तक पहुँची। इनकी शिक्षा कोलोरेडो विश्वविद्यालय से हुई। 1905 में ये शिकागो विश्वविद्यालय से Ph.D की उपाधि प्राप्त किये और बाद में इनकी नियुक्ति इसी विश्वविद्यालय में हो गई। 1925 में कार ने एक पुस्तक 'Psychology: A Study of Mental Activity' प्रकाशित किये जो कि काफी लोकप्रिय हुई। इस पुस्तक में उन्होंने प्रकार्यवाद को एक संपूर्ण एवं विकसित संप्रदाय के रूप में प्रस्तुत किया। संक्षेप में इनका योगदान निम्नलिखित है:—

एक संप्रदाय के रूप में प्रकार्यवाद

हार्वे कार के विचारधाराओं के आधार पर एक संप्रदाय के रूप में प्रकार्यवाद के उनके योगदानों को निम्नांकित भागों में बाँटा जा सकता है।

- मनोविज्ञान की परिभाषा एवं विषय-वस्तु
- पूर्वकल्पनाएँ
- कार्य-प्रणाली विधि
- मन-शरीर समस्या
- आँकड़ों का स्वरूप
- संबंध के नियम
- चयन की प्रक्रिया

→ मनोविज्ञान की परिभाषा एवं विषय-वस्तु -

कार के अनुसार मनोविज्ञान मानसिक क्रिया या अनुकूली व्यवहार का अध्ययन करता है। जिसमें स्मृति, भाव, प्रत्यक्षण, इच्छा आदि प्रक्रियाएँ होती हैं। इससे व्यक्ति को वातावरण के साथ समायोजन करने में मदद मिलती है। कार ने चेतन को एक अमूर्त विचार माना है जो कि पर्यावरण के साथ समायोजन में व्यक्ति को कोई भी सहयोग नहीं करता है।

NOTES

Scanned with CamScanner

कार के अनुसार अनुकूली व्यवहार के तीन गुण होते हैं — जैसे — एक भूखा व्यक्ति द्वारा होटल जाकर भोजन करना। इसमें —
- अभिप्रेरण उद्दीपन — भूख
- संवेदी उद्दीपन — भोजन तथा
- अनुकूली व्यवहार — भोजन करना है।

उद्दीपन के रूप में अभिप्रेरण व्यक्ति के व्यवहार को तब तक प्रभावित करता है, जब तक की उसकी तुष्टि नहीं हो जाती या वह प्रभावहीन नहीं हो जाता है।

इसप्रकार कार ने प्रकार्यवादी मनोविज्ञान को व्यवहारवाद के नजदीक ले आते हैं।

→ **पूर्वकल्पनाऐं** — मार्क्स तथा क्रोनबाक - हिलगार्ड के अनुसार प्रकार्यवादियों की कुछ पूर्वकल्पनाऐं है —

(i) सभी क्रियाओं की उत्पत्ति किसी-न-किसी संवेदी उद्दीपन से होती है।

(ii) संवेदी उद्दीपन से व्यक्ति का व्यवहार भी प्रभावित होता है।

(iii) प्रत्येक व्यवहार अनुकूली एवं उद्देश्यपूर्ण होती है।

(iv) व्यवहार एक सतत प्रक्रिया होती है जिससे उद्दीपन परिस्थिति में सकारात्मक परिवर्तन होता है।

→ **कार्य-प्रणाली विधि** — कार ने मानसिक क्रियाओं के अध्ययन के लिए अन्तर्निरीक्षण, सामान्य प्रेक्षण तथा प्रयोगात्मक विधि को स्वीकार किये हैं। साथ ही उन्होंने यह आशंका भी व्यक्त की है कि मनुष्यों के साथ प्रयोग में प्रयोगात्मक विधि अधिक वैध नहीं है, क्योंकि मनुष्यों की क्रियाओं पर पूर्ण नियंत्रण जो कि इस विधि के लिए आवश्यक है, संभव नहीं है।

→ **मन-शरीर समस्या** — कार ने मानसिक क्रिया को मनोदैहिक माना है। उन्होंने भी स्पष्ट किया था कि कोई भी अनुकूली क्रिया या मानसिक क्रिया में मानसिक तथा दैहिक दोनों ही तरह के घटनाएँ सम्मिलित होते हैं अतः दोनों के बीच अन्तःक्रिया होती है।

Scanned with CamScanner

→ आँकड़ों का स्वरूप — प्रकार्यवाद में प्राणियों का वातावरण के साथ समायोजन पर बल डालकर वस्तुनिष्ठ आँकड़ों तथा अन्तर्निरीक्षण को स्वीकार करके आत्मनिष्ठ आँकड़ों पर बल डाला गया है। लेकिन अधिक झुकाव वस्तुनिष्ठ आँकड़ों पर ही है। कार ने प्रत्यक्षण, संवेदन तथा चिंतन को भी वस्तुनिष्ठ ढंग से परिभाषित किया है।

→ संबंध के नियम — प्रकार्यवादियों के लिए संबंध के नियम से तात्पर्य सीखने के नियमों से था। इसलिए उनके शोध कार्यक्रमों का यह मुख्य बिन्दु था। इस सिलसिले में कार ने साहचर्य के नियमों को भी महत्वपूर्ण बतलाया। सीखने की प्रक्रिया में निहित मुख्य प्रकार्यवादी नियम है —

(i) सीखने वाले व्यक्ति की क्षमता में वैयक्तिक अन्तर होता है।
(ii) अभ्यास की मात्रा के अनुरूप शिक्षण वक्र का आकार होता है।
(iii) सीखने के लिए अभिप्रेरणा का होना आवश्यक है।
(iv) अर्थ की मात्रा के आधार पर सामग्रियों की अर्थपूर्णता से अर्थहीनता की दिशा में मापा जा सकता है।

→ चयन की प्रक्रिया — प्रकार्यवाद में कार ने व्यवहार चयन की प्रक्रिया पर भी बल डाले हैं। वे ध्यान, अभिप्रेरणा तथा सीखना को व्यवहार चयन के तीन प्रमुख स्रोत बतलाते हैं जो कि तीन तरीकों से संचालित होता है —

(i) अनुभूति द्वारा व्यक्ति अनुकूली प्रक्रिया या साहचर्य को सीखता है।
(ii) जैसे-जैसे व्यक्ति अनुकूली प्रक्रिया को सीखता है, भविष्य में समान उत्तेजन परिस्थिति से सामना होने पर वही अनुक्रिया उत्पन्न कर सकने की क्षमता विकसित हो जाती है।
(iii) कुछ अनुकूली प्रक्रिया या साहचर्यों को व्यक्ति द्वारा सीख लिये जाते हैं, क्योंकि वे समाज द्वारा लागू किये जाते हैं जैसे — किसी विशेष जाति के प्रति व्यक्ति द्वारा अधिक स्नेह दिखलाना।

NOTES

इस प्रकार कहा जा सकता है कि कार ने प्रकार्यवाद के मुख्य तत्वों को काफी स्पष्ट तरीके से उपस्थित किया है, जिससे इसकी लोकप्रियता एक नई ऊँचाई तक पहुँच पायी।

Scanned with CamScanner